PHILOSOPHY

PG, Paper-VIII (Sem.-II)

Conception of World (Ramanuj)

रामानुज का जगत विचार

Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951.

→ रामानुज का ब्रह्म विषयक सिद्धान्त 'विशिष्टाद्वैत' कहलाता है। इसके अनुसार ब्रह्म अद्वैतस्वरूप है क्योंकि वह स्वजातीय एवं विजातीय भेदों से रहित है। आशय यह है कि न तो ब्रह्म के समान कोई अन्य तत्त्व है और न ही ब्रह्म से भिन्न स्वतन्त्रवाला कोई अन्य तत्त्व है। परन्तु इस ब्रह्म में स्वगत भेद है। यह ब्रह्म चित् और अचित् से विशिष्ट है - 'विशिष्टाद्वैत'। चित् और अचित् ब्रह्म के विशेषण हैं जबकि ब्रह्म विशेष्य है। यहाँ भेद अभेद के विशेषण के रूप में है।

→ रामानुजाचार्य के अनुसार द्वैतरहित अद्वैत और अद्वैतशून्य द्वैत दोनों ही कल्पना है क्योंकि भेद के बिना अभेद और अभेद के बिना भेद सिद्ध नहीं होता। अतः दोनों सदा साथ रहते हैं और इनमें पार्थक्य संभव नहीं है। रामानुज के अनुसार अनुसार अभेद भेद के द्वारा, भेद के कारण और भेद में ही संभव है। अतः वे अभेद और भेद की दोनों विरोधी कोटियों को अस्वीकार करते हैं और इनके बजाय भेदान्वित अभेद (Identity-in-difference) की मान्यता देते हैं और शंकराचार्य के विपरीत जगत की सत्यता सिद्ध करते हैं।

→ रामानुज के अनुसार सृष्टि वास्तविक है। रामानुज का यह सृष्टि विचार ब्रह्म-परिणामवाद कहलाता है जो सत्कार्यवाद का एक रूप है। ~~सत्कार्यवाद~~

→ सत्कार्यवाद के अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में सत् अर्थात् विद्यमान रहता है। कार्य कोई नवीन उत्पत्ति नहीं अपितु कारण का प्रकट स्वरूप है। जो कारण में अव्यक्त रहता है, कार्य में वही व्यक्त हो जाता है।

→ ब्रह्मपरिणामवाद यह बताता है कि सृष्टि ब्रह्म का वास्तविक परिणाम है। यह संपूर्ण जगत ब्रह्म के विशेषण-अंश (चित्-अचित्)

Scanned with CamScanner

का वास्तविक रूपान्तरण है। इसी कारण जगत भी सत् है।

→ रामानुज के अनुसार ईश्वर और जगत के बीच भी अपृथक्सिद्ध संबंध है। रामानुज के अनुसार ब्रह्म कारण है और जगत कार्य है। कार्य कारण से पूर्णतः पृथक् नहीं हो सकता। ईश्वर जगत का निमित्त और उपादान कारण दोनों है। अतः ईश्वर विश्व-व्याप्त एवं विश्वातीत दोनों है।

→ रामानुजाचार्य ईश्वर, चित् और अचित् - इन ~~तीनों~~ तीन तत्वों की सत्ता स्वीकार करते हैं। चित् और अचित् दोनों स्वरूप में द्रव्य हैं किन्तु ईश्वर के गुण या धर्म हैं। चित् और अचित् का ही वास्तविक रूपान्तरण (ईश्वर का) यह जगत है। इसमें चित् ही जीवात्मा है तथा अचित् जड़।

→ अचित् द्रव्य तीन प्रकार का होता है - (i) शुद्ध-सत्व, ~~सत्व~~ (ii) सत्व-शून्य और (iii) मिश्र सत्व।

→ शुद्ध-सत्व रज और तमोगुण से रहित है। इससे वैकुण्ठ लोक की वस्तुएँ, ईश्वर एवं मुक्त जीवों के शरीर का निर्माण होता है।

→ सत्वशून्य सत्, रज और तम से रहित होता है। सत्वशून्य जड़-द्रव्य 'काल' है।

→ मिश्र-सत्व में सत्व, रज और तम तीनों गुण रहते हैं। रामानुज इसे ही प्रकृति, माया या लीलाविभूति कहते हैं। यह जड़, भोग्य एवं विकारों से युक्त है। यह प्रकृति ही सृष्टि का मूल उपादान तत्व है।

→ यहाँ उल्लेखनीय है कि सांख्य ने भी प्रकृति को सृष्टि का उपादान कारण माना है। परन्तु सांख्य दर्शन में प्रकृति स्वतंत्र है तथा सत्व, रज और तम प्रकृति के निर्माणक घटक हैं। ये भी द्रव्य रूप हैं, परन्तु रामानुज दर्शन में प्रकृति ब्रह्म पर आश्रित है, साथ ही सत्व, रज और तम प्रकृति के गुण हैं, संघटक तत्व नहीं।

Scanned with CamScanner